इकाई 34 चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और जापान के साथ युद्ध

इकाई की रूपरेखा

34.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्तः

- आपको साम्यवादियों के लौंग मार्च (महान अभियान) से जुड़ी विशेष घटनाओं की जानकारी होगी,
- साम्यवादियों द्वारा जापानी साम्राज्यवादियों के आक्रमण के सक्रिय विरोध को समझने का अवसर प्राप्त होगा,
- द्वितीय संयुक्त मोर्चे के दौरान साम्यवादियों द्वारा अपनायी गयी बहुत सी सामरिक नीतियों का ज्ञान भी होगा, और
- आपको यह भी ज्ञात होगा कि साम्यवादियों ने अपने अधीन क्षेत्रों के शासन का संचालन कैसे किया।

34.1 प्रस्तावना

जापान के साथ हुए युद्ध का समय दूसरे संयुक्त मोर्चे का समय भी था। प्रथम संयुक्त मोर्चे की भांति ही दूसरे संयुक्त मोर्चे का गठन अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के साथ-साथ चीन के आन्तरिक राजनीतिक अनुभव की गतिशीलता के कारण हुआ था। आपको इस पर आश्चर्य होगा कि जबकि प्रथम संयुक्त मोर्चा असफल हो गया था तब जापान के विरुद्ध युद्ध में दूसरे संयुक्त मोर्चे का गठन क्यों किया गया? हम देख चुके हैं कि चीन के साम्यवादी दल का सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यक्रम न केवल क्योमिंनटांग से भिन्न था अपितु उसका विरोधी भी। इस तरह कुछ इस प्रकार की परिस्थितियां थीं कि चीन के साम्यवादी दल को जापान के विरुद्ध युद्ध करने को प्राथमिकता देनी पड़ी और यहां तक कि उसे इस लक्ष्य के लिये क्योमिंनटांग के साथ फिर एक संयुक्त मोर्चा बनाना पड़ा।

जहां एक ओर इस प्रकार की विशेष अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां थीं वहीं राष्ट्रीय स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की

थी । इस इकाई में हम इन परिस्थितियों का उल्लेख करेंगे और उसी के साथ हम जापान के विरुद्ध युद्ध में चीन के साम्यवादी दल की भूमिका को भी समझने का प्रयास करेंगे । इस इकाई में जापान के विरुद्ध लड़े गये युद्ध की प्रकृति पर भी प्रकाश डाला गया है । चीन के साम्यवादी दल क्योमिंनटांग के संबधों के लिए इसका क्या अर्थ था । उसका चीन के मजदूरों एवं किसानों के साथ कैसा संबंध था—इन सभी पक्षों की भी इस इकाई में विवेचना की गई है ।

साम्यवादियों के दृष्टिकोण से चीन में दूसरा संयुक्त मोर्चा सफल रहा था क्योंकि इसने क्रान्ति की सफलता, चीन के एकीकरण और स्वतन्त्रता के लिये एक पृष्ठभूमि तैयार की । चीन के अन्दर राजनीतिक तथा सामाजिक शक्तियों के एक ऐसे सह-संबंध का उद्‌भव हुआ जिसके अन्तर्गत मजदूर वर्ग एवं किसान एक निर्णायक शक्ति बने और चीनी क्रान्तिकारी आंदोलन में साम्यवादी भी एक प्रधान राजनीतिक शक्ति बने । अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच के दृश्य के साथ-साथ इस इकाई में उपरोक्त सभी पक्षों की विवेचना की गई है । उस समय की अन्र्राष्ट्रीय स्थिति चीन के साम्यवादी दल तथा क्योमिंनटांग के संबंधों तथा जापान के विरुद्ध उनके युद्ध का एक अविभाज्य अंग थी । इसलिये सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी शक्तियों को अलग-अलग करने के लिये व्यापक लोकप्रिय मोर्चों का निर्माण करने का निर्णय केवल चीन के लिये अपनायी गई विशेष सामरिक नीति न थी । अपितु इसको राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त करने या जर्मन फासीवाद के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये सभी देशों में अपनाया गया । इस समय में लगभग सम्पूर्ण चीन पर अधिकार करने वाला जापान भी जर्मनी के साथ था परन्तु इग्लैंड और फ्रांस उनके संग न थे । इसलिये इस समय चीन में जो दूसरा संयुक्त मोर्चा बनाया गया वह जापान के विरुद्ध निर्देशित था ।

चीन के क्रान्तिकारी संघर्ष के बहुत से पक्षों की विवेचना के साथ-साथ इस इकाई में इस पर भी बल दिया गया है कि ऐसे लोग जो विश्व भर में शोषण के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं वे एक दूसरे से अपृथक तौर पर जुड़े हैं । ठीक इसी तरह से बेहतर जीवन के लिये संघर्ष में लक्ष्य एवं कार्य की एकता ही अधिक सफलता की ओर ले जाती है । इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको यह ज्ञान हो जायेगा कि विश्व भर में फासीवाद के विरुद्ध होने वाले संघर्ष में हिस्सा लेने से चीनी क्रान्तिकारी आंदोलन के हित और इस क्रान्तिकारी आंदोलन का मुख्य रूप से गठन करने वाले मज़दूर एंव किसानों के हित किस प्रकार आगे बढ़े ।

34.2 महान अभियान (लौंग मार्च) की पृष्ठभूमि

इकाई-33 में उद्धत किये गये महान अभियान (लौंग मार्च) का प्रारम्भ उस समय हुआ जबकि साम्यवादियों को अपने क्यांगसी क्षेत्र को छोड़ने के लिये बाध्य किया गया । क्योमिंनटांग सेनाओं द्वारा प्रतिदिन की गई हवाई बमबारी एवं मशीन गनों से हजारों किसानों की हत्या कर दी गई । ताकत के बल पर किये गये जन विस्थापन तथा बड़े स्तर पर आम फांसियों के द्वारा सम्पूर्ण क्षेत्र को आबादी विहीन कर दिया गया । केवल लाल सेना के ही 60,000 सैनिक मारे गये । लाल सेना के मुख्य भाग को सुरक्षित तौर पर बाहर निकालने के लिये हजारों किसान समर्थकों ने अपनी अन्तिम सांस तक संघर्ष किया और इन लाल समर्थकों की अपार वीरता की स्मृति को चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सदैव याद रखा है ।

महान अभियान के वापस लौटते सदस्यों में केवल मुख्य सेना न थी अपितु उनके साथ हजारों गरीब किसान भी थे । वास्तव में इस अभियान में बूढ़े, जवान, पुरुष एवं स्त्री, बच्चे, साम्यवादी सभी शामिल थे । कुछ ऐसे हथियार और बारूद जिनको वे इस महान प्रस्थान के दौरान ले नहीं जा सकते थे, मार्ग के साथ-साथ दबा दिये गये । ऐसा इस आशा के साथ किया गया कि एक दिन बेहतर परिस्थितियों में संघर्ष के जारी रहते उनका उपयोग किया जा सकेगा । इस अभियान के दौरान इसमें भाग लेने वाले आधे लोग एवं आधी सामग्री नष्ट हो गये थे ।

पराजित एवं अस्त-व्यस्त सेना के लिये यह अभियान शानदार वीरता का कार्य था । रास्ते भर उनको प्रकृति की कठोरताओं के साथ-साथ क्योमिंनटांग की सशस्त्र सेनाओं तथा युद्ध सामन्तों के विरुद्ध युद्ध करना पड़ा । इस विशाल अभियान के दौरान उन्होंने ग्यारह प्रांतों, दूर-दराज के इलाकों, अठारह पर्वतों की

शृंखलाओं तथा चौबीस बड़ी नदियों को पार किया। इस महान अभियान का प्रारम्भ 16 अक्तूबर, 1934 को हुआ था और इसका अन्त 1937 में येनान के ऊँचे-नीचे क्षेत्रों में 800 मील की दूरी को तय करने के साथ हुआ। केवल 30,000 लोगों से कम ही इस यात्रा को पूरी कर पाये। केवल 30 के करीब ही महिलायें जीवित बचीं। मृत्यु पाने वालों में माओ त्सु तुंग की पत्नी भी थी। जो लोग येनान के शेंसी क्षेत्र में पहुँचे थे वे विश्वसनीय एवं अनुशासित कठोर कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने एक ऐसी शक्ति का गठन किया जो भविष्य के चीनी सोवियत गणतन्त्र का निर्माण करने वाली थी। उनमें माओ, चु-तेह, लिनपिओ तथा चाऊ ऐनलाई प्रमुख थे।

यह महान अभियान चीन के इतिहास में अत्याधिक महत्वपूर्ण और सबसे अधिक साहसिक घटना है। जिस समय इसका विवरण कुछ पृष्ठों में ही किया जाता है तब शायद यह अधिक वीरता का कार्य प्रतीत नहीं होता। लेकिन इसकी महानतम उपलब्धि को तभी पहचाना जा सकता है जब आप हजारों लोगों के एक साथ प्रस्थान करते हुए उस दृश्य की कल्पना करें जिसमें उन्होंने स्वयं की पर्याप्त हथियारों के बिना रक्षा की और न उनके पास पर्याप्त भोजन तथा दवाई थी। यद्यपि उनको कुछ सामग्री अपने समर्थकों द्वारा दूर-दराज के इलाकों को पार करते समय प्राप्त अवश्य होती थी। इस सन्दर्भ में आप यह भी कल्पना कर सकते हैं कि लम्बे, मुश्किलों से भरपूर रास्तों को पार करते समय हजारों लोगों, सैकड़ों बूढ़े एवं बीमार लोगों की देखभाल करना कोई सरल कार्य न था। माओ सहित कई अन्य ने अपने नजदीकी एवं प्रिय लोगों को खो दिया था। वे अपने साथ जिस एक मात्र वस्तु को लेकर गये वह दुर्जय राजनीतिक इच्छा एवं शक्ति थी और उसको उन्होंने, इस उच्चतम लक्ष्य से प्राप्त किया था जिसके लिये वे संघर्ष कर रहे थे। वे जानते थे कि वे एक ऐसे नये चीन के लिये संघर्ष कर रहे हैं जो शोषित-पीड़ित तथा निर्धन लाखों लोगों के लिये बेहतर जीवन को सुनिश्चित करेगा।

जिस किसी भी इतिहासकार या संवाददाता ने चीन के इतिहास पर जो कुछ भी लिखा है उन सभी ने इस महान यात्रा में भाग लेने वालों के प्रति भरपूर सम्मान व्यक्त किया है। ऐसे संवाददाता जो इस महान अभियान के साथ-साथ कुछ दूरी पर चल रहे थे और उनको समाचार पत्रों को इसके विषय में समाचार भेजने थे—वे सभी आजीवन इसके समर्थक हो गये।

> ऐग्निज स्मेडली, ऐडगर स्नो, डॉ. नोमेंन तथा बेथने ने महान अभियान का बड़ा सजीव एवं स्पष्ट विवरण किया है और इनसे हमें ऐसे लोगों के जीवन की जानकारी प्राप्त होती है जिनके विषय में कोई ज्ञान न होता। जब कभी भी आपको उनको पढ़ने का अवसर मिले आप अवश्य ही उनको पढ़ें।

जिस समय महान अभियान का प्रारम्भ किया गया था तब ऐसा प्रतीत होता था कि सम्पूर्ण चीन पर च्यांग काई शेक का नियन्त्रण है। लेकिन साम्यवादियों के द्वारा क्यांगसी एवं दक्षिण चीन में स्थित अन्य लाल क्षेत्रों को छोड़ना साम्यवाद की विजय के लिये एक निर्णायक घटना साबित हुई। अपनी मुश्किल एवं लम्बी यात्रा के अन्त में अन्ततः साम्यवादियों ने क्योमिंनटांग की सेनाओं के विरुद्ध एक वास्तविक शक्तिशाली आधार को स्थापित करने में सफलता प्राप्त की। इस तरह से क्रान्ति को बचाने के मुख्य लक्ष्य को प्राप्त कर लिया गया यद्यपि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये उनको अपने हजारों कार्यकर्त्ताओं के जीवन का बलिदान कर भारी मूल्य चुकाना पड़ा।

इस महान अभियान से तीन ऐसे कारक संबंधित हैं जिनके कारणवश साम्यवादी क्रान्ति को जीवित रहने में मदद प्राप्त हुई :

i) लौंग मार्च ने "साम्यवादियों एवं जनवादी मुक्ति सेना" (People's Liberation Army) की साहसिक एवं सच्चे राष्ट्रवादी के रूप में सम्मान में वृद्धि करने में योगदान किया। क्योमिंनटांग लगातार यह दावा करती रही कि साम्यवादियों को हमेशा के लिये पराजित कर दिया गया है। वे ऐसा प्रचार इसलिये कर पाये कि उनका प्रेस एवं सार्वजनिक प्रचार माध्यमों पर नियन्त्रण था। इसके परिणामस्वरूप अधिकतर लोग यह न जान सके कि चीन के दूर-दराज के क्षेत्रों में क्या घटित हो रहा था। इसके बावजूद भी स्नो तथा स्मेडली के समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों के द्वारा पश्चिमी दुनिया को सूचनायें प्राप्त होती रहीं और पूरी दुनिया की जनतान्त्रिक शक्तियों ने धन एवं औषधि जैसी

आवश्यक चीजों का योगदान किया जिससे कि दूर-दराज के क्षेत्रों में मेडिकल इकाइयों को स्थापित करने में सहायता मिली। यद्यपि इस तरह की सहायता सागर में एक बूंद की भांति थी किन्तु इसने स्वयं चीन के अन्दर साम्यवादियों के सम्मान को बढ़ाने में बड़ी मदद की। यह लौंग मार्च गीतों एवं किंवदन्तियों का शीर्षक बन गया और साम्यवादी नये चेतनाशील चीन के स्वीकृत नेता हो गये।

ii) लौंग मार्च की बदौलत चीन के साम्यवादी आंदोलन में एक नयी एकता स्थापित हुई। इसके साथ ही पार्टी पर माओ का नेतृत्व सुदृढ़ हो गया। जिस समय शत्रु के क्षेत्रों में आगे तक बढ़ना सम्भव न था तब मार्च के साथ-साथ छोटी-छोटी सभाओं का उपयोग राजनीतिक शिक्षा एवं नेतृत्व की राजनीतिक सभाओं के लिये किया गया। तत्कालिक वास्तविकताओं के अनुभवों की रोशनी में साम्यवादियों ने परस्पर विद्यमान मतभेदों को भी पूर्ण रूपेण मजबूती से इस अवधि में दूर कर लिया।

iii) साम्यवादियों का मानवीय एवं शारीरिक स्तर पर जो भी अनुभव रहा हो लेकिन लौंग मार्च के द्वारा उनको हजारों की संख्या में समर्पित कार्यकर्ता प्राप्त हुए। यह स्वयं में कठोर शारीरिक एवं राजनीतिक शिक्षा का प्रशिक्षण था। इसके द्वारा उनका चीन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों एवं वहां की जनता के साथ भी सम्पर्क हुआ।

जिस समय साम्यवादियों ने उत्तरी शांशी और येनान में अपना सशक्त अड्डा बनाया तो एक ओर उन्होंने अपने विचारों को मार्ग में विशाल जनसमुदाय के मध्य प्रसारित किया और दूसरी ओर उन्होंने चीनी किसानों, उनके दृष्टिकोण एवं आदतों के विषय में भी बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया। इस समय हुनान या क्यांगसी वाली स्थिति की अपेक्षा साम्यवादी राजनीतिक तौर पर कहीं अधिक समझदार हो चुके थे। संक्षेप में लौंग मार्च ने साम्यवादियों को शत्रु के विरुद्ध अन्तिम आक्रमण करने तथा अपनी सम्भावित विजय प्राप्त करने के लिये तैयार किया। दूसरी तरफ क्योमिंनटांग के सैन्य बलों की तुलना में जनवादी मुक्ति सेना द्वारा जनता के साथ किये गये व्यवहार में जमीन आसमान का अन्तर था। जनता ने व्यवहार के इस अन्तर को पहचान साम्यवादी सेना को अपनी सेना माना। इस प्रकार सम्पूर्ण चीनी जनता ने साम्यवादियों को अपने नेताओं के तौर पर स्वीकार कर लिया। मार्च के दौरान उन्होंने अपने लाल समर्थकों एवं साथियों की संख्या को काफी बढ़ाया और यहाँ तक कि अपनी मुख्य सेना के लिये नयी भर्ती भी की। ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि चीन के सभी क्षेत्रों की निर्धन जनता युद्ध सामन्तों एवं क्योमिंनटांग के द्वारा शोषित की जाती थी।

34.3 येनान की सामरिक नीति

जिन कारणों से साम्यवादियों ने क्यांगसी क्षेत्र का चुनाव किया था उन्हीं कारणों से उन्होंने येनान का नये क्षेत्र के रूप मे चुनाव किया। इसको स्पष्ट करते हुए एडगर स्नो ने लिखा "येनान रक्षा के लिये आदर्श तौर पर एकीकृत था। यह चट्टानों की ऊँची पहाड़ियों से घिरा था और जहां चट्टानों की प्रबल दीवारें ऊपर की ओर जाती हैं।"

पहले की ही भांति इस बार भी मुक्ति क्षेत्रों को सशस्त्र संघर्ष, किसानों के हितों के अनुरुप भूमि स्वामित्व में परिवर्तन और स्थानीय स्तर पर छापामार युद्ध के आधार पर स्थापित किया गया। इन क्षेत्रों को ऐसे स्थान पर बनाया गया जहां पर सरकारी सेनाओं के लिये पहुंचना आसान न था। लेकिन अब संघर्ष के इस चरण में साम्यवादियों का मुख्य शत्रु क्योमिंनटांग न होकर जापान हो गया। आप इकाई 33 में पढ़ चुके हैं कि किस तरह से जापानी साम्राज्यवादियों ने चीन पर आक्रमण किया था। इस पक्ष के विषय में व्यवहारिक स्तर पर सोचा जाये तब हम देखते है कि महले जिन लोगों को शत्रु के पक्ष में समझा जाता था अब उनमें से बहुतों को जापान विरोधी संघर्ष में शामिल किया जा सकता था। इसलिये पहले के चीनी सोवियत गणतन्त्रों की तुलना में इस बार के साम्यवादी नियन्त्रण के क्षेत्रों के सामाजिक आधार में व्यापक वृद्धि हुई थी।

सामाजिक रूपांतरण की एक ऐसी सामरिक नीति, जिसके द्वारा सामाजिक आधार में वृद्धि को सुनिश्चित किया जा सकता था, इस स्तर पर अपनायी जानी अति आवश्यक थी। ऐसा इस तथ्य को भी ध्यान में रखकर किया गया कि इस बार चीन की कम्युनिस्ट पार्टी को एक विभाजित एवं भ्रष्ट दुश्मन का सामना नहीं करना था। जापानी साम्राज्यवादियों की अनुशासित एवं शक्तिशाली सशस्त्र सेनायें क्योमिंनटांग की सेनाओं से बिल्कुल भिन्न थी। क्योमिंनटांग को ऐसे युद्ध सरदारों पर निर्भर रहना पड़ता था जो एक दूसरे के

विपरीत थे। अब यह ऐसा गृह युद्ध न था जिसमें कि क्योमिंनटांग बगैर किसी प्रकार के सामाजिक रूपांतरण के एकता का प्रयास कर रहा था और कुछ युद्ध सरदार नियन्त्रण के स्वतन्त्र साधनों में रुचि रखते थे। क्योमिंनटांग और चीन के मज़दूरों तथा किसानों के बीच जो युद्ध हुआ उसमें निहित जटिलताओं के कारण साम्यवादियों ने युद्ध के विषय में एक विशेष प्रकार का दृष्टिकोण अपनाया था किन्तु अब परिवर्तित राजनीतिक सन्दर्भ में उसका कोई औचित्य न रह गया था।

इसलिये येनान की सामरिक नीति जापानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध संयुक्त मोर्चे की तत्कालिक सामरिक नीति थी। इस नीति के साथ-साथ सामाजिक रूपांतरण की नीति को भी चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनाया क्योंकि उसको इस समय क्यांगसी दौर की अपेक्षा एक व्यापक आधार प्राप्त होने वाला था। वास्तव में उनकी सामरिक नीति के ये दोनों पक्ष एक-दूसरे के साथ अंतर्संबंधित एवं एकीकृत थे।

34.3.1 जापानी आक्रमण

प्रथम विश्वयुद्ध के अन्त में अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों के बावजूद पूंजीवादी विश्व 1929 तक भयंकर आर्थिक संकट में फंस गया। आगामी तीन वर्षों में यह संकट और भी भयावह हो गया। जापान एवं जर्मनी को इन अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों से कोई लाभ न हुआ था और इस आर्थिक संकट ने उनको जबरदस्त ढंग से प्रभावित किया। इन देशों में विश्व के ''नये'' विभाजन की मांग की गई। जापान के साम्राज्यवादियों ने देखा कि आक्रमण नीति ही इसका एक मात्र समाधान है। जापान ने नौ देशों की संधि की धाराओं के विरुद्ध अभियान चलाकर चीन से यूरोपीय शक्तियों तथा संयुक्त राज्य अमेरिका को बाहर करने का प्रयास किया। इसके बदले वह चीन को अपना उसी प्रकार का उपनिवेश बनाना चाहता था जैसा कि ब्रिटेन का उपनिवेश भारत था। उन्होंने अपना पहला आक्रमण 18 सितम्बर, 1931 को किया। 1933 तक उनके प्रभाव में संपूर्ण उत्तरी चीन का मैदान आ गया, 1935 तक उन्होंने आन्तरिक मंगोलिया पर अधिकार कर लिया और 1937 तक वे चीन में सर्वोच्च शक्ति बन गये। इस समय में मारको पोलो ब्रिज पीकिंग से दक्षिण की ओर की एक मामूली सी घटना को बहाना बनाकर जापान ने युद्ध घोषित किये बगैर सम्पूर्ण चीन पर धावा बोल दिया।

जापानियों ने जिस बर्बरता से सर्वनाश किया वह रोंगटे खड़ा कर देने वाला था। इस सन्दर्भ में नानकिंग की सरकार के पतन का वह दृष्टांत दिया जा सकता है जबकि जापानी सेनाओं ने तीन लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। यांग्तसी क्षेत्र में शरणार्थियों को मशीन गनों की गोलियों से भून डाला गया। ठीक इसी प्रकार से चीन के अन्य भागों में जान एवं माल का व्यापक नुकसान किया गया।

यूरोपीय शक्तियां पहले से ही जर्मनी के साथ युद्ध में फंसी थी। जर्मनी उनके लिए तत्कालिक खतरा था और इस कारण वे कोई हस्तक्षेप न कर सकीं। संयुक्त राज्य अमेरीका उस समय तक तटस्थ बना रहा जब तक कि जापान ने 1941 में पर्ल हार्बर पर आक्रमण न कर दिया। चीन में क्योमिंनटांग की सरकार भी पश्चिमी शक्तियों के प्रति समझौतावादी नीति का अनुसरण कर रही थी और उसने भी 1941 में पर्ल हार्बर पर जापान के आक्रमण तथा हांगकांग एवं सिंगापुर के पतन तक जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा न की। जापानियों का चीन पर लगभग स्वतन्त्र शासन कायम हो गया। चीन के अधिकारियों की अयोग्यता के कारण हजारों लोगों की जानें बिना किसी कारण के चली गई। भय के कारण उन्होंने हिनान की राजधानी चांगलिसा में आग लगा दी और वहाँ के निवासियों के साथ-साथ 8 लाख शरणार्थी मारे गये। जापानियों के आगे बढ़ने को धीमा करने के लिये उन्होंने पीली नदी के बांध को तोड़ दिया जिससे हजारों लोगों की जानें चली गई। इस प्रकार जापान के विरुद्ध संघर्ष चीन के लिये जीवित रहने का प्रश्न बन गया। चीन के इतिहास में इस राजनीतिक मोड़ पर साम्यवादियों के लिये जापान के विरुद्ध संघर्ष करना प्राथमिक कार्य हो गया।

34.3.2 अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

इस लक्ष्य के लिये न केवल चीन के अन्दर व्यापक सम्भावित मोर्चे को गठित किया गया अपितु उन अन्य देशों के साथ भी गठबंधन किया गया जो जापान के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू हो जाने से फासीवादी शक्तियों—जर्मनी, इटली एवं जापान के विरुद्ध व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय मोर्चे का गठन किया गया। इस व्यापक मोर्चे में ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ और 1941 के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल थे। वे स्वयं को मित्र राष्ट्र कहते थे। राष्ट्रीय मुक्ति की सामाजिक शक्तियां भी इस

व्यापक मोर्चे में शामिल हो गई। भारत के लिये चुनाव सरल एवं पूर्णतः स्पष्ट था क्योंकि मित्र राष्ट्र जापान के विरुद्ध संघर्षरत थे। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के लिये भी इसके साथ गहरे प्रश्न जुड़े थे। जर्मनी, इटली एवं जापान के विरुद्ध लोकप्रिय मोर्चा लोकतन्त्र तथा प्रथम समाजवादी राज्य सोवियत संघ के जीवित बने रहने के लिये हो रहे संघर्ष का प्रतिनिधित्व करते थे। चीन की कम्युनिस्ट पार्टी अपनी स्वयं की सफलता के लिये इन दोनों परिस्थितियों को आवश्यक मानती थी। इसलिये फासीवाद की विजय के अर्थ को जापान के हाथों होने वाली चीन की पराजय समझा गया और यदि फासीवाद की ताकतें पराजित हो जाती हैं तब चीन की स्वतन्त्रता को सुनिश्चित माना गया। संक्षेप में उन्होंने विश्व राजनीतिक स्थिति और उसमें अपनी स्वयं की भूमिका तथा स्थान को ठीक उसी प्रकार से समझ लिया जैसा कि भारतीय नेताओं ने समझा था। परन्तु यह एक समान घटनाक्रम नहीं है कि उपनिवेशवाद के समाप्त होने की प्रक्रिया, भारत की स्वतन्त्रता एवं चीनी क्रान्ति दूसरे विश्व युद्ध में फासीवादी ताकतों की पराजय के कारण हुई।

चीन की कम्युनिस्ट पार्टी तथा क्योमिनटांग जिस अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के भाग थे, उसके निर्माण की प्रक्रिया लम्बी एवं दुःखदायी थी। चीन में जापानी आक्रमण का प्रारम्भ 1931 में हुआ और 1934 तक उसने विस्फोटक स्थिति ग्रहण कर ली। इस समय तक पश्चिमी शक्तियां प्राथमिक तौर पर सोवियत संघ का विरोध करना अपने हित में समझती थीं। चीन के अन्दर भी उनके अपने आर्थिक निवेश एवं नियन्त्रण के क्षेत्र थे। जिस समय जापान ने उनको चीन से बाहर निकालना शुरू किया और जर्मनी ने उनको यूरोप एवं विश्व के अन्य भागों में चुनौती देनी प्रारम्भ की तभी उन्होंने जर्मनी एवं जापान का गम्भीरता पूर्वक विरोध प्रारम्भ किया। जैसा कि पहले उद्धृत किया गया है कि संयुक्त राज्य अमेरिका 1941 में ही युद्ध में शामिल हुआ। लेकिन इस समय तक चीन में जापान के विरुद्ध संयुक्त विरोध आंदोलन विकसित हो चुका था।

34.3.3 आर्थिक कारण

जापान एवं यूरोपीय शक्तियों तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बढ़ते संघर्षों का आधार चीन के अन्दर उनके आर्थिक विरोधों में निहित था। चीन की अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों पर पूर्ण रूप से साम्राज्यवादी नियन्त्रण था। सन् 1937 में चीन की रेलवे में 90.7 प्रतिशत विदेशी पूंजी लगी थी। चीन के कोयला उत्पादन का 55.7 प्रतिशत, यांग्तसी नदी में चलने वाले मालवाहक जहाजों का 18.9 प्रतिशत तथा विद्युत उत्पादन का 55 प्रतिशत विदेशी कम्पनियों के हाथों में था। सम्पूर्ण लोहा उत्पादन जापानियों के अधीन था। 1936 में चीन के सूत कातने वाले कारखानों का 46.2 प्रतिशत तथा कपड़ा मिलों का 56.4 प्रतिशत विदेशी पूंजी के अधीन था। बैंक नोटों को जारी करने की सुविधा भी विदेशी बैंकों के पास थी। उनका चुंगी तथा नमक पर भी नियन्त्रण था। इस प्रकार साम्राज्यवादी पूंजी ने चीन का आर्थिक शोषण उसी तरह से किया जैसा कि भारत का किया जा रहा था।

यदि 1930 के आंकड़ों के साथ तुलना की जाये तब 1936 तक ब्रिटेन के द्वारा किये गये निवेश में कोई वृद्धि न हुई थी। अमेरीकी निवेश की गई पूंजी में 20 प्रतिशत की वृद्धि हुई। यद्यपि इसका सम्पूर्ण धन कोई विशेष न था। इन वर्षों में चीन के अन्दर जापान द्वारा की गई निवेश पूंजी में 48 प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह वृद्धि चीन में निवेश की गई विदेशी पूंजी की आधी थी। जापान ने विशेष रूप से उत्तरी-पूर्वी चीन के बाजार, भूमि, कारखानों, खानों, कच्चे औद्योगिक माल और संचार एवं परिवहन पर अपनी इजारेदारी कायम कर ली थी। इन सबका परिणाम यह हुआ कि चीन के उद्योगपतियों एवं व्यापारियों को जहाँ एक ओर चीन के अन्दर ही औद्योगिक लाभ में भारी नुकसान उठाना पड़ा वहीं उनको विदेशी व्यापार एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में भी भारी नुकसान हुआ। चीन के तीन बड़े कपड़ा उद्योगों के केन्द्रों पर भी जापान का नियन्त्रण था।

इन सभी आंकड़ों के अवलोकन से स्पष्ट है कि राष्ट्रीय क्रान्तिकारी आंदोलन के सामाजिक आधार को व्यापक करने की सम्भावनायें काफी प्रबल थीं। इसी कारणवश जापान को प्रमुख निशाना बनाना आवश्यक हो गया था।

34.3.4 जापान का सामाजिक एवं राजनीतिक विरोध

जापान के आक्रमण का विरोध तत्काल शुरू हो गया था। 1932 में क्यांगसी सोवियतों ने मंचूरिया पर जापान द्वारा किये गये आक्रमण के विरुद्ध जापान युद्ध की घोषणा कर दी थी। यद्यपि यह प्रतीकात्मक विरोध से अधिक कुछ न था। लेकिन नगरों की जनता में जापानियों का विरोध करने की जबरदस्त प्रवृत्ति

बढ़ रही थी। नगरों में जन मत को सक्रिय करने एवं जापानी सामान के बहिष्कार को संगठित करने में बुद्धिजीवियों ने अग्रिम भूमिका अदा की। छात्र आंदोलन भी राष्ट्रीय विरोध आंदोलन के रूप में विकसित हो गया। 1931 के बसंत में हाई स्कूल तथा विश्वविद्यालय के 15000 छात्र राजधानी की सड़कों पर सैनिक अभ्यास करते और सरकार को बातचीत करने से रोकने तथा जापान पर युद्ध घोषित करने के लिये दबाव डालने हेतु प्रदर्शन करते देखे गये। इन आंदोलनों की अपार शक्ति को पुर्नसंगठित करते हुए चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सम्पूर्ण देश से अपील की कि वे जापान के विरुद्ध संघर्ष करने के लिये साम्यवादियों के साथ आ जायें। इस कार्य को 1935 में लौंग मार्च के प्रारम्भ करने से काफी समय पहले तथा अपने येनान अड्डे पर पहुँचने से पूर्व ही पूरा कर लिया गया था। चीनी संयुक्त मोर्चे की सामरिक नीति यूरोप में फासीवाद विरोधी संयुक्त मोर्चे के समरूप थी और इसका जन्म पहले ही हो चुका था। यद्यपि इसको अपना स्वरूप ग्रहण करने तथा लागू करने में कुछ और अधिक समय लगा।

क्योमिंनटांग सरकार ने 1941 तक जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की और वह साम्यवादियों को अपना प्रमुख शत्रु मानती रही। लेकिन इन सबके बावजूद चीनी जनता के बीच जापान विरोधी बढ़ती भावनाओं ने 1935 में उसे बाध्य कर लिया। विद्यार्थी, बुद्धिजीवी, व्यवसायिक लोग और इनके साथ-साथ श्रमिक जनता भी विशेषकर चीन के पूर्वी भाग में बसने वाले लोग, काफी जोर से आवाज उठा रहे थे। उत्तरी चीन में जापान के हमलों के कारण व्यापक विद्यार्थी विद्रोह फूट पड़ा। अब इस विद्यार्थी आंदोलन को नौ दिसम्बर के आंदोलन (1935) के नाम से जाना जाता है। चीन की राजधानी पीकिंग में विशाल प्रदर्शन हुए। जापान शेष चीन से पांच प्रांतों को अलग करना चाहता था परन्तु विद्यार्थियों के इस आंदोलन ने इस योजना को पूरा होने से रोकने के लिये महत्वपूर्ण योगदान किया। बहुत से नगरों में व्यापारियों एवं कुलियों ने जापानी सामान के विरुद्ध बहिष्कार आंदोलन भी प्रारम्भ किया।

अन्त में मई 1936 में विद्यार्थियों की पहल कदमी पर **पान-चीन फेडरेशन ऑफ एसोशियेशन फॉर नेशनल सालवेशन** का गठन किया गया। यह शीघ्र ही शक्तिशाली राष्ट्रीय आंदोलन के लिये संगठित केन्द्र बन गया।

इस प्रतिष्ठित एसोशियशन से निर्देशकों के रूप में बहुत से वकील, पत्रकार एवं प्राध्यापक जुड़े थे और उन्होंने गृह युद्ध को समाप्त करने तथा जापान का संयुक्त विरोध करने का आहवान किया। इस आहवान को प्रभावी बनाने का यह तात्पर्य था कि नये संयुक्त मोर्चे की चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा कामिंटर्न की नीति को मान लिया जाना। चीन के पूर्वी नगरों में इस फेडरेशन ने साम्यवादियों के साथ सहयोग किया।

ये संगठन एवं आंदोलन जहाँ एक ओर जापान के विरुद्ध थे वहीं ये चीनी सरकार की समझौतावादी नीति एवं जापान के प्रति कमजोर नीति का भी विरोध करते थे। इस राजनीतिक पृष्ठभूमि में "सियान की घटना" हो गई जिसका बड़ा ही महत्व है। 12 दिसम्बर, 1936 को च्यिांग काई शेक का उसके एक जनरल के द्वारा अपहरण कर लिया गया। उस समय च्यिांग काई शेक सियान के दौरे पर था। चीनी सेना अपने देश की जनता के साथ युद्ध करने से खुश न थी चाहे वे साम्यवादी क्यों न रहे हों। सैनिकों ने उसके सम्मुख निम्नलिखित आठ मांगें रखीं:

1) नानकिंग की सरकार को पुनः संगठित किया जाये और ऐसे सभी दलों को उसमें शामिल किया जाये जो राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सामूहिक उतरदायित्व में भाग लें।
2) गृह युद्ध को तुरन्त समाप्त किया जाये और जापान के विरुद्ध सशस्त्र विरोध की नीति को अपनाया जाये।
3) शंघाई में जापान के विरुद्ध आंदोलन के नेताओं को रिहा किया जाये।
4) सभी राजनीतिक बंदियों को माफी दी जाये।
5) जनता को सभा करने की स्वतंत्रता की गारन्टी दी जाये।
6) जनता के देश भक्ति संगठन बनाने तथा राजनीतिक स्वतंत्रता के अधिकारों को सुरक्षित बनाया जाये।
7) डॉ. सन यात सेन की इच्छाओं को प्रभावी बनाया जाये।
8) तत्काल एक राष्ट्रीय मुक्ति सम्मेलन बुलाया जाये।

इस कार्यक्रम को लागू करने के निम्नलिखित तरीकों पर जोर दिया गया:

- जापान के विरुद्ध सम्पूर्ण चीनियों का एक संयुक्त मोर्चा बने,

- साम्यवादियों के दमन को तुरन्त खत्म किया जाये, और
- व्यापक राजनीतिक सुधार किये जायें।

क्योमिंनटांग की समझौतावादी नीति ने लोगों को यह सोचने के लिये बाध्य कर दिया कि अपनी भावनाओं के प्रति उत्तरदायी एक लोकतान्त्रिक एवं राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता थी। राष्ट्रवाद एवं क्रान्ति के बीच की कड़ी चीनी जनता की चेतना में पैदा हो चुकी थी। यह महसूस किया जाने लगा कि राजनीतिक सुधार एवं अभिव्यक्ति तथा जनता की संगठित राजनीतिक इच्छा की स्वतन्त्रता के बगैर जापान का संयुक्त तौर पर विरोध नहीं किया जा सकता था। अब चीनी राष्ट्र को स्वतन्त्र राजनीतिक इच्छा तथा सामाजिक रूपांतरण की स्पष्ट घोषणा से अलग करके नहीं रखा जा सकता था।

1931 से 1937 तक आम जनता के मत की अभिव्यक्ति ने इस कड़ी को चीनी जनता के मस्तिष्क एवं राजनीतिक व्यवहार मे स्थापित करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान किया। क्यांगसी काल में नगरों में जनता कोई विशेष राजनीतिक गतिविधियां न चला पायी थी लेकिन इस समय वे चीनी क्रान्तिकारी आंदोलन के साथ जुड़ गयी थी। अब दक्षिण में स्थित क्यांगसी तथा अन्य लाल क्षेत्रों के गुरूत्वाकर्षण का केन्द्र हटकर उत्तर के उन क्षेत्रों में आ गया जहाँ पर जापान का आक्रमण एवं अधिकार था।

''आठ मांगों'' के साथ-साथ फेडरेशन ऑफ एसोसियशन ऑफ नेशनल सालवेशन के द्वारा प्रस्तुत किये गये कार्यक्रम चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की तत्कालिक मांगों के साथ सांमजस्य रखते थे। चीनी लाल सेना, सोवियत सरकार तथा चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने क्योमिंनटांग से जापान के विरुद्ध जनता के संयुक्त मोर्चे में शामिल होने की अपील की। च्यांग काई शेक को मुक्त कर दिया गया। पिछले छः वर्षों में घटित राजनीतिक घटनाक्रम के दबाव में च्यांग काई शेक को निम्न बातों के लिए बाध्य होना पड़ाः

- चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की वैधता,
- साम्यवादियों के दमन का अन्त, और
- उनके साथ सामूहिक तौर पर कार्य करना।

उसने कुछ राजनीतिक सुधारों का भी वायदा किया। इस प्रकार चीन में एक बार फिर दूसरे संयुक्त मोर्चे के गठन ने सामाजिक एवं राजनीतिक शक्तियों के पुनः गठबंधन को सम्भव बनाया। लेकिन यह पहले संयुक्त मोर्चे से काफी भिन्न था।

बोध प्रश्न 1

1) लौंग मार्च (महान अभियान) के महत्व की 10 पंक्तियों में विवेचना करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित में कौन सा कथन सही है और कौन सा गलत है? उन पर (✓) या (×) का चिन्ह लगायें।

   i) च्यांग काई शेक ने लौंग मार्च (महान अभियान) का समर्थन किया।
   ii) साम्यवादियों के द्वारा येनान का नये क्षेत्र के रूप में चुनाव किया गया।

iii) क्यांगसी सोवियतों ने जापान के हमले का स्वागत किया।
iv) सियान में च्यांग काई शेक का गर्म जोशी के साथ स्वागत किया गया।

3) चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने दूसरे संयुक्त मोर्चे का गठन क्यों किया? दस पंक्तियों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

34.4 व्यवहार में संयुक्त मोर्चा

जापान के विरुद्ध चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तथा क्योमिंनटांग का संयुक्त मोर्चा लगातार सरलता से कार्य नहीं कर पाया। व्यवहारिक तौर पर इसका तात्पर्य यह भी था कि जिस समय तक जापानी चीन की भूमि पर बने रहेंगे तब तक के लिये साम्यवादियों ने क्योमिंनटांग को शक्ति के बल पर सत्ताच्युत करने का इरादा त्याग दिया था। लेकिन यह एक समस्या पूर्ण विषय था। बहुत सी व्यवहारिक मुश्किलों एवं सामाजिक तनावों का निपटारा किया जाना था क्योंकि संयुक्त मोर्चे के दौरान क्योमिंनटांग ने अपनी इन नीतियों में संशोधन नहीं किया था जबकि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी इन नीतियों में संशोधन कर लिया था। दूसरे साम्यवादियों ने अपनी सशस्त्र सेनाओं को बनाये रखा था जबकि वे नेशनल आर्मी (राष्ट्रीय सेना) के भी सदस्य बने हुए थे। इस प्रकार साम्यवादी "आठवीं मार्चिगं आर्मी" एवं "न्यू फोर्थ आर्मी" के सभी भाग बन गये इसमें क्योमिंनटांग के सैनिक अधिकारी भी थे।

प्रारम्भ में च्यिांग काई शेक ने जापानियों के विरुद्ध एक कड़ा रुख अपनाया। 13 अगस्त, 1937 को उसने शंघाई बन्दरगाह पर जापानी नौ सेना के विरुद्ध अपनी श्रेष्ठतम सेना को कार्यवाही के लिये नियुक्त किया। इस समय जापानियों ने महसूस किया कि अब उन्हें सम्पूर्ण चीनी जनता की अपार शक्ति के विरुद्ध मुकाबला करना था और इसी कारणवश उन्होंने भी अपने सम्पूर्ण संसाधनों को गतिशील करने का निश्चय किया। चीनियों के पास इतने श्रेष्ठ हथियार न थे जितने जापानी सेना के पास फिर भी चीनी सेना ने एक-एक इंच भूमि के लिये साहस के साथ संघर्ष किया। इसके परिणामस्वरूप चीनियों की हजारों की संख्या में हत्या हुई। शंघाई में हुआ यह संघर्ष सैनिक दृष्टिकोण से निरर्थक साबित हुआ लेकिन राजनीतिक दृष्टिकोण से इसके द्वारा किये गये साहस एवं वीरता का प्रदर्शन महत्वपूर्ण था। इस लड़ाई की कहानियां जब देश के दूसरे क्षेत्रों में गईं तब उसने देशभक्ति की भावनाओं को प्रज्जवलित किया।

जिन पत्रकारों ने इस लड़ाई के विषय में अपनी रिपोर्ट भेजी उन्होंने लिखा "1937-1938 की सर्दियों में चीन में अदभुत कार्य हुआ।" नानकिंग की पराजय के पश्चात सरकार को हंकाओ में स्थानांतरित कर दिया गया। इस समय उद्देश्य के प्रति पूर्ण एकता थी और ऐसा प्रतीत होता था कि सम्पूर्ण चीन आगे बढ़ रहा था। युद्ध सामंतों की सेनाओं ने दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम से युद्ध में शामिल होने के लिये प्रस्थान किया। साम्यवादी कार्यकर्त्ता, जापानी सेना के विरूद्ध बहादुरी से लड़े। युद्ध में जबरदस्त तरीके से भाग लेने के लिये हंकाओ में सरकार एवं साम्यवादियों ने एक साथ बैठकर योजनायें तैयार कीं। साम्यवादी सेना की एक

अन्य इकाई का गठन किया गया। अप्रैल 1938 में पहली बार जापान के इतिहास में उसकी सेना को चीन में पराजित होना पड़ा।

लेकिन ऐसा मात्र एक ही युद्ध में हो सका और इस एक मात्र विजय के उपरान्त चीन का एक के बाद दूसरा क्षेत्र जापान की आर्थिक एवं सैन्य सर्वोच्चता के सम्मुख घुटने टेकता चला गया। उन्होंने जिस चीज की इच्छा की वही उनके आंचल में आ गई, बड़े-बड़े बन्दरगाहों, औद्योगिक तथा व्यापारिक केन्द्रों, तीन मुख्य नदियों के मुहानों पर तथा राजधानी—इन सभी पर जापानियों का अधिकार हो गया।

परन्तु इस घटनाक्रम पर क्योमिंनटांग एवं साम्यवादियों के विचार भिन्न-भिन्न थे। इसके फलस्वरूप जापान के विरूद्ध संघर्ष करने के लिये सामरिक नीति में दो भिन्न प्रकार के दृष्टिकोण उत्पन्न हो गये—प्रथम था ठहराव तथा दूसरा जनवादी युद्ध। च्यांग काई शेक का मानना था कि जिस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय सहायता प्राप्त नहीं हो जाती तब तक संघर्ष को रोक देना चाहिये और यह सहायता 1941 तक पश्चिमी शक्तियों से प्राप्त न हो सकी (इसका पहले भी उल्लेख किया जा चुका है)। च्यांग काई शेक की अवधारणा का यह अर्थ निकलता था कि संघर्ष को कुछ समय के लिये रोक दिया जाये। लेकिन साम्यवादियों ने अपने लाल क्षेत्र येनान से जापान के विरूद्ध संघर्ष को जारी रखा।

1938 तक च्यांग काई शेक को यह स्पष्ट होने लगा था कि साम्यवादी अपने छापामार युद्ध के द्वारा जापानियों के विरूद्ध जनता को बेहतर ढंग से संगठित कर रहे थे। इस कारण वे जनता की सहानुभूति भी जीत रहे थे। संयुक्त मोर्चे के अन्दर अब तनाव गहरे हो गये और च्यांग काई शेक ने अपने पहले की नीति के अनुसार लाल क्षेत्रों की नाकेबन्दी को पुनः प्रारम्भ कर दिया। 1939 के बसंत में उसकी सेनाओं ने साम्यवादियों के विरूद्ध पहले हुनान, फिर हुबई तथा हेबई में कार्यवाही की। नवम्बर में उसकी सेनाओं ने येनान के दक्षिणी भाग को लाल प्रभाव से अलग कर दिया। जनवरी 1941 में साम्यवादियों के मुख्यालय पर आक्रमण किया गया और उनके बहुत से नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया या उनकी हत्या कर दी गयी।

1941 में 50 करोड़ की अमेरीकी वित्तीय सहायता, चीन को दी गई और वह क्योमिंनटांग को प्राप्त हुई। अब च्यांग काई शेक साम्यवादियों के विरूद्ध संघर्ष करने पर अधिक आतुर था। 1944 के प्रारम्भ में जापान का दूसरा प्रहार प्रारम्भ हो गया। जापानी सेनाओं ने एक सप्ताह के अन्दर ही क्योमिंनटांग की सेनाओं को पराजित कर दिया। दक्षिण-पश्चिम की ओर होने वाली अपनी आगामी विजयों में उन्होंने शेष रहे अमेरीकी अड्डों को भी नष्ट कर दिया। युद्ध की स्थिति में भी च्यांग काई शेक साम्यवादियों की भांति जनवादी छापामार युद्ध प्रणाली को अपनाने में असफल रहा। वास्तविकता यह है कि 1938 में ही क्योमिंनटांग का जापान के विरूद्ध संघर्ष मृतप्राय हो चुका था।

34.5 येनान क्षेत्रः विरोध करने के स्वरूप

जुलाई 1939 में माओ त्से-तुंग का लेख "जापानी आक्रमण का सामना करने के लिये नीतियां, उपाय, तथा दृष्टिकोण" के नाम से प्रकाशित हुआ। अपने इस लेख में माओ ने बताया कि साम्यवादी नीति पूर्ण विरोध की नीति है और इसकी विशेषता यह है कि इस विरोध के लिये वह जनता के विश्वास पर आश्रित है। युद्ध स्वयं में कोई अन्त न था बल्कि साम्यवादियों का मानना था कि जनता को लामबन्द करना अति अनिवार्य था। यह एक स्वतन्त्र एवं समानता पर आधारित नये चीन का निर्माण करने की दिशा में एक साधन था। यही कारण था कि जहाँ एक ओर साम्यवादियों ने स्वतन्त्र रूप से छापामार युद्ध को जारी रखा वही उन्होंने दुश्मन द्वारा जीते गये क्षेत्रों में जापान विरोधी अड्डों को स्थापित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

युद्ध के इस चरण में साम्यवादियों की आठवीं रूट आर्मी तथा न्यू फोर्थ आर्मी नें संघर्षपूर्ण युद्ध लड़ा और उसने उत्तर तथा केन्द्रीय चीन में बहुत से जापान विरोधी अड्डों की स्थापना की। 1938 की सर्दियों से 1940 के अन्त तक इन अड्डों में वृद्धि होती रही। इन क्षेत्रों में जापान विरोधी स्थानीय जनशासन की

स्थापना हुई। साम्यवादियों द्वारा अपनी सेनाओं को शत्रु के इलाके के पीछे भेजने के कारणवश ही केवल इन क्षेत्रों की स्थापना न हो पाई थी अपितु इसके अन्य कारण भी थे। जापान अधिकृत इलाकों में किसान आत्म रक्षा समूह, स्वायत्त छापामार, विद्यार्थियों के समूह और क्योमिनटांग के असन्तुष्ट समूह जैसे संघर्षकारी दूसरे समूह स्वतः प्रकट होने लगे। ये दोनों प्रकार के प्रयास एक दूसरे के पूरक थे। इस तरह की युद्ध प्रणाली की अन्तिम परिणति बहुत से लाल अड्डों की स्थापना के रूप में होने के कारण सेना तथा नागरिकों के बीच का अन्तर लुप्त हो गया। सैन्य संगठन स्थायी सेना से लेकर क्षेत्रीय लड़ाकुओं, ग्रामीण रक्षा समूहों, तथा ऐसे किसानों तक फैला हुआ था जो अपने कृषि कार्यों को छोड़े बगैर अक्सर सैनिक कार्यवाहियों में भाग लेते थे। किसानों का समर्थन नये सिपाहियों की भर्ती कराने, सूचना देने, तथा परिवहन सुविधा, खाद्य सामग्री एवं आपात काल के दौरान अन्य प्रकार की सहायता उपलब्ध कराने में निर्णायक साबित हुआ।

सैनिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के बीच का विभेद भी समाप्त हो गया क्योंकि ये लाल क्षेत्र चीनियों द्वारा नियन्त्रित जापानियों का विरोध करने वाले केन्द्रों में परिवर्तित हो गये। दूसरी ओर ये ऐसे क्षेत्र थे जहाँ पर चीनी जनता की पहलकदमी पर स्वतन्त्र एवं नवीन चीन का निर्माण हो रहा था। ऐसा इसलिये सम्भव हो पाया क्योंकि चीन की जनता स्वयं इस युद्ध को लड़ रही थी।

जब च्यांग काई शेक ने संघर्ष को रोक दिया तब जापानी आक्रमण का भार पूर्णतः साम्यवादियों एवं लाल क्षेत्रों पर हो गया। जापानियों ने चीन के घरों एवं तैयार फसलों को नष्ट करने का अपना अनवरत अभियान जारी रखा। लेकिन जापानियों के द्वारा किये गये बर्बरता पूर्ण अत्याचार के फलस्वरूप चीन में साम्यवादियों का समर्थन लगातार बढ़ता रहा और जापान के विरूद्ध लाल क्षेत्र उनके एक मात्र शरण स्थल बन गये। ऐसे राष्ट्रों की सरकारें जो जापान विरोधी थीं चीन के अन्दर केवल क्योमिंनटांग का समर्थन कर रही थीं। इसलिये अमेरीकी सहायता या युद्ध के अन्त में जापान पर बढ़ते अन्तर्राष्ट्रीय दबाव से क्योमिंनटांग को ही लाभ पहुंचा। इन राष्ट्रों के द्वारा साम्यवादियों को अपना शत्रु माना गया। इन परिस्थितियों में लाल क्षेत्र पूर्णतः अलगाव की स्थिति में थे और वे केवल चीन की मेहनतकश जनता की शक्ति की बदौलत ही बने रह सके। इन लाल क्षेत्रों के बग़ैर चीन में न तो जापान के विरूद्ध समझौता विहीन संघर्ष किया जा सकता था और न ही स्वतन्त्र एवं संयुक्त चीन का अस्तित्व कायम हो पाता।

34.6 लाल क्षेत्रः नये प्रकार का समाज

यद्यपि लाल क्षेत्र अठारह जगहों में फैले हुए थे लेकिन इन क्षेत्रों में किये गये सामाजिक रूपांतरण के प्रयोग को येनान सामरिक नीति या येनान प्रारूप के नाम से जाना जाता है। येनान सामरिक नीति के पीछे जो विचार था उसको निम्न पंक्तियों के द्वारा स्पष्ट तौर पर समझा जा सकता हैः "यदि आप एक ऐसे किसान को अपना साथी बनाते हैं जबकि उसको अपने काम के दिनों के दौरान सदैव धोखा दिया गया हो, उसकी पिटाई की गई हो और उसको लात मारी जाये, और आप उसके साथ मानवीय व्यवहार करें, उसके मत को जानें, उसको स्थानीय सरकार के लिये मत डालने दें, उसको स्वयं को अपने क्षेत्र की पुलिस का गठन करने दें, उसको अपने करों का स्वयं निर्धारण करने दें, तब किसान एक ऐसा आदमी बन जाता है जो कुछ प्राप्त करने के लिये संघर्ष करता है। वह इसकी सुरक्षा के लिये किसी भी शत्रु के विरूद्ध संघर्ष करेगा चाहे यह शत्रु जापानी हो या फिर चीनी।"

यही वह महत्वपूर्ण नीति थी जिसको साम्यवादियों ने लाल क्षेत्रों में अपनाया। इन क्षेत्रों के लिये इस योजना को 1940 में माओ त्से-तुंग द्वारा लिखित "नये लोकतन्त्र पर" नामक पुस्तिका में देखा जा सकता है। लेकिन इसका प्रयोग इससे पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। जापानियों एवं चीन में उनके जमींदार सहयोगियों के विरूद्ध सम्पूर्ण चीनी जनता के संयुक्त मोर्चे का प्रारम्भ हो जाने के कारण आवश्यकताओं के अनुरूप भूमि नीति का स्थान लगान कम करने की उदार नीति ने ले लिया। भूमि लगान में 25 प्रतिशत तक की कमी की गई। अपनी इस नीति के द्वारा साम्यवादियों ने ऐसे धनी, मध्यम एवं गरीब किसानों के बहुमत का समर्थन प्राप्त किया जो खेती करने वाली भूमि पर काश्तकार थे। उनकी नीति का दूसरा पक्ष ब्याज की दरों में कमी करना था और उसको उन्होंने 10 प्रतिशत वार्षिक दर से तय कर दिया। इससे उनका और समर्थन बढ़ा। तीसरा पक्ष एक प्रगतिशील कर नीति को लागू करना था जिसका अर्थ यह था कि धनी जमींदारों पर

अधिक कर और निर्धनों पर कम कर। यह भी किसानों के पक्ष में किया गया सराहनीय कदम था क्योंकि उनको अपनी आमदनी की तुलना में बहुत अधिक कर अदा करना होता था। इस परिवर्तन का भी स्वागत किया गया। दक्षिण या केन्द्रीय चीन की अपेक्षा उत्तरी चीन के येनान क्षेत्र में बड़े भूस्वामी कम थे। भूमि अधिग्रहण की नीति को छोड़ दिये जाने का मतलब यह नहीं था कि वे मजबूत एवं शक्तिशाली बने रहे।

इन सुधारों के साथ-साथ उत्पादन को बढ़ाने के लिये भी उपाय किये गये। यह महसूस किया गया कि यदि जनता के रहन-सहन के स्तर को सुधारना है तो उत्पादन में भी वृद्धि करनी होगी। पार्टी, सरकार एवं सेना ने उत्पादन में वृद्धि करने के लिये जनता की मदद करने हेतु अपने प्रयासों को तेज किया। जापान विरोधी युद्ध के दौरान सेना एवं सरकारी संस्थाओं ने शैंसी-कांसू-सीमा क्षेत्र में उत्पादन वृद्धि के लिये दो अभियानों का संचालन किया। प्रथम का उद्देश्य (1938 में) रहन-सहन की परिस्थितियों को सुधारना था और दूसरे का लक्ष्य (1941 में) आत्म निर्भरता था। शत्रु की सीमाओं में बने लाल क्षेत्रों में गहन उत्पादन अभियान का प्रारम्भ 1942 में किया गया। 1943 तक इसने एक व्यापक आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर लिया। इस अभियान को मुक्त क्षेत्रों में बहुत अधिक सफलता प्राप्त हुई। उत्पादन के क्षेत्र तथा अनाज उत्पादन में भी व्यापक वृद्धि हुई।

उत्पादन वृद्धि तथा उत्पादन संगठन की प्रणाली में सुधार सहित राजनीतिक शिक्षा के नये स्वरूपों को लागू करने के लिये किसानों को पारस्परिक सहयोग दलों एवं सहकारी समितियों के रूप में संगठित किया गया। इस सहयोग में जो सिद्धांत निहित था वह स्वतः कार्य करने एवं पारस्परिक लाभ पर आधारित था। इस प्रकार किसानों ने सामूहिक श्रम तथा औजारों के सामूहिक इस्तेमाल के माध्यम से एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया के नये स्वरूपों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। जिन तरीकों को अपनाया गया वे उदार एवं स्थानीय परिस्थिति के अनुरूप थे। सहकारी इकाइयों का आकार भिन्न प्रकार का था। उत्पादन इकाई का निर्माण एक गाँव के स्तर पर या एक गाँव के भाग के रूप में किया गया था जिससे कि एक प्रशासनिक इकाई की अपेक्षा वह स्थानीय लोगों के लिये सुविधाजनक एवं उनकी इच्छाओं के अनुरूप हो। आमदनी जो स्वाभाविक तौर पर एक महत्वपूर्ण मामला है, उसका निर्धारण किसी द्वारा खेत पर किये गये श्रम तथा उसके द्वारा खेती में निवेश की गई पूंजी के आधार पर किया गया इस तरह जो जितना अधिक श्रम करता उसको उतना ही अधिक प्राप्त होता। इस प्रकार सहकारी समितियों की व्यवस्था के द्वारा इस निर्णायक राजनीतिक मोड़ पर किसानों के बीच उत्पन्न होने वाली ईर्ष्या एवं विरोधाभास जैसी कमजोरियों को अलग रखा जा सका। इस प्रकार सामूहिक प्रयासों को लागू करते हुए भी व्यक्तिगत किसान पर आधारित अर्थव्यवस्था को बनाए रखा गया। इससे किसान को बिना भूमि पर उसके स्वामित्व को चुनौती मिले सहयोग की प्रेरणा मिली। ये प्रयोग ग्रामीण स्तर पर किसानों के आर्थिक जीवन में लोकप्रिय सहयोग के नये स्वरूपों एवं नयी संगठनात्मक संरचनाओं का प्रतिनिधित्व करते थे।

औद्योगिक सहकारिताओं को विकसित करने का हस्तशिल्पकारी के क्षेत्र में गांव के स्तर पर ही प्रयास किया गया। उन्होंने स्वयं के लिये कृषि यन्त्रों, कपड़ा, कागज़ आदि वस्तुओं का उत्पादन किया।

तेल शोधन, लोहा ढालने, मशीन बनाने, युद्ध सामग्री की मरम्मत करने, कपड़ा, जीवन उपयोगी वस्तुओं आदि का उत्पादन पूरे युद्ध काल में जारी रहा।

आर्थिक मोर्चे पर शत्रु से संघर्ष करने के लिये शत्रु द्वारा नियन्त्रित किये गये क्षेत्रों के साथ व्यापार करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। अनाज, कपास, लोहा तथा चमड़े के निर्यात को प्रतिबंधित कर दिया गया जबकि नमक, दियासिलाई, कपड़ा, बिजली के समान, सैन्य सामग्री एवं अन्य दूसरी आवश्यक वस्तुओं के आयात को बढ़ाया गया।

आर्थिक मोर्चे पर किये गये इन प्रयासों के कारण जापानियों द्वारा किये गए सर्वनाश, लूट एवं नाकेबन्दी का सफलतापूर्वक सामना किया जा सका। इसने लाल क्षेत्रों की रक्षा करने में मदद की और आर्थिक आत्म-निर्भरता को प्रोत्साहित किया। इस नीति के कारण ही स्थानीय आबादी से कर के रूप में लिये जाने वाले अनाज की मात्रा में कमी आयी नये प्रयोगों के लिये मजबूत आधार पैदा करने में भी इससे मदद मिली जिनका आगे चल कर साम्यवादी शासन ने अनुसरण किया।

आर्थिक संगठन के इन परिवर्तनों ने नये लोकतन्त्र के ढांचे को निर्मित करने के लिये दृढ़ आधारशिला के रूप में कार्य किया। लाल क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर राजनीतिक शक्ति का विभाजन, पार्टी, जनता के जन

संगठनों तथा जनवादी मुक्ति सेना के बीच कियां गया। राज्य का वित्त, उत्पादन, शिक्षा तथा सामान्य प्रशासन जैसी सार्वजनिक सेवाओं पर नियत्रंण था। राज्य स्वयं में एक विकेन्द्रीकृत संस्था थी। राज्य के अधिकारीगण सक्रिय तौर पर उत्पादन की प्रक्रिया से जुड़े थे। नेतृत्व संगठनों के कार्य के बीच जो समय बचता था उसमें माओ त्से-तुंग स्वयं अपनी गुफा के आस-पास टमाटर एवं तम्बाकू का उत्पादन करता था। पार्टी का कार्य नये लोकतन्त्रीय ढांचे का निर्माण करने के लिये जनता के बीच सम्पर्क कायम करना एवं उसे राजनीतिक तौर पर गतिशील करना था। युवकों, महिलाओं, तथा किसान एवं मज़दूरों के जन संगठनों ने उत्पादन की देखरेख करने सहित जनता की राजनीतिक चेतना को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। जैसा कि हम पहले ही सेना के विषय में उद्धृत कर चुके हैं, उसने युद्ध करने के साथ-साथ अन्य कई महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्यों को भी पूरा किया। इस सम्पूर्ण प्रयोग को "जनवादी लाइन" के नाम से जाना गया था क्योंकि इन नीतियों के अनुसरण के साथ-साथ जनता की पहलकदमी को बहुत सी गतिविधियों में शामिल किया गया था।

नये लोकतान्त्रिक ढांचे का आधार ग्रामीण, जिला एवं क्षेत्रीय—सभी स्तरों पर स्वतन्त्र तथा सार्वभौमिक चुनाव था। वे सभी जिनकी आयु अठारह वर्ष से अधिक थी सभी संस्थाओं के चुनाव में भाग ले सकते थे। लेकिन यह सुनिश्चित किया गया था कि निर्वाचित लोगों में 1/3 साम्यवादी, 1/3 स्वतन्त्र वामपंथी सदस्य, तथा 1/3 वे उदारवादी एवं लोकतान्त्रिक सदस्य हो सकते थे जो कभी क्योमिंनटांग के सदस्य भी रहे हों। इस प्रकार संयुक्त मोर्चे को एक राजनीतिक स्वरूप प्रदान करने के लिये मेहनतकश मध्यम एवं निर्धन किसानों के गठबंधन, छोटे पूंजीपतियों, बुद्धिजीवियों एवं "राष्ट्रीय पूंजीपतियों" को प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। संक्षेप में जापान के विरूद्ध दूसरे संयुक्त मोर्चे में उन सभी लोगों का स्वागत किया गया जो जापानी साम्राज्यवाद एवं सामन्तवाद का विरोध करना चाहते थे।

चुनावी प्रक्रिया एवं प्रतिनिधित्व के अतिरिक्त सहकारिताओं के आर्थिक निर्णयों में, गाँव आत्म रक्षा लड़ाकू दस्तों में तथा नयी भूमि नीति को लागू करने में सभी सदस्यों की भागेदारी को सुनिश्चित करके लोकतन्त्र को अधिक व्यापक एवं गहन बनाया गया। साधारण व्यक्तिगत आत्म अभिव्यक्ति की अपेक्षा लोकतन्त्र ने स्वयं ही उच्च सम्पर्क ग्रहण करना शुरू कर दिया। इस प्रकार जापानियों के विरूद्ध सामूहिक संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से संगठित करने के लिये यह एक साधन बन गया। लाल क्षेत्रों की लगभग सम्पूर्ण आबादी ने नये लोकतान्त्रिक शासन का समर्थन किया यद्यपि वह, जापानियों के विरूद्ध युद्ध के बहुत से तरीकों से फंसी हुई थी। लाल क्षेत्रों का ग्रामीण अंचलों में स्थित होने के कारण स्वाभाविक था कि नये शासन का मुख्य सामाजिक आधार किसान ही थे किन्तु इसमें मेहनतकशों, बुद्धिजीवियों एवं राष्ट्रीय पूंजीपतियों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित कर देने से केवल भूमि सुधार की अपेक्षा व्यापक कार्यों के लिये नीति गत ढांचे को तैयार करने को भी सुनिश्चित कर दिया गया था।

महिलाओं को लामबन्द करने के लिये भी विशेष प्रयास किये गये। महिला संगठनों को नयी नीति के ढांचे के साथ तथा उनके समय की मांगों के साथ जोड़ते हुए केवल बल प्रयोग के द्वारा किये जाने वाले विवाहों, माता-पिता, तथा ससुराल एवं पति के सहायक के रूप में कार्य करने, या राजनीतिक एवं सामाजिक मांगों जैसी समस्याओं को हल करने तक सीमित न रखा गया। उन्होंने महिलाओं को कृषि कार्यों तथा सहकारिताओं में भाग लेने के लिये गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान किया। यद्यपि इन स्थानीय समितियों में राजनीतिक नेतृत्व के लिये मात्र 8 प्रतिशत महिलाएं ही चुनी गईं फिर भी उनकी मुक्ति के कार्य का प्रारम्भ हो चुका था।

34.7 अन्तिम चरण

1941 में संकटात्मक स्थिति पैदा हो गई। मुक्त किये गये लाल क्षेत्रों में नये प्रकार की सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन रचना कर दिये जाने से सम्पूर्ण जनता के समर्थन को प्राप्त कर लिया गया था। लेकिन इस समय में जापानी आक्रमणों में और तेजी आ गई और लाल सेना की नाकेबन्दी एक बार फिर पूर्णतः कर ली गई। क्योमिंनटांग के साथ भी संबंध पूर्ण रूप से समाप्त हो गये थे। जापानियों ने "सभी की हत्या एवं सभी कुछ लूट लो" की नीति का अनुसरण किया। वास्तव में यह वर्ष साम्यवादियों के लिये जबरदस्त

कठिनाइयों वाला था। 1941 में पर्ल हार्बर पर बमबारी किये जाने के बाद अमेरीकियों तथा अंग्रेज़ों ने चीन के अन्दर जापानियों पर अपना दबाव बढ़ाना शुरू कर दिया। लेकिन वे अपने हितों को आगे बढ़ा रहे थे। साम्यवादी अमेरीका तथा ब्रिटेन को जापान के स्थान पर लाने का समर्थन नहीं करते थे। लेकिन क्योमिंनटांग ने उनका विरोध नहीं किया। इसलिये युद्ध की इन परिस्थितियों में चीन के अन्दर अमेरीका एवं ब्रिटेन के प्रवेश करने से केवल क्योमिंनटांग को लाभ मिला। क्योमिंनटांग भी 1941 तक पुनः साम्यवादियों का विरोध करने लगा था। इसी कारणवश 1941 के बाद मुक्त किये गये क्षेत्रों पर दबाव बढ़ने लगा।

1941 से 1943 तक जापानियों ने अधिकृत क्षेत्रों तथा मुक्त लाल क्षेत्रों के आस-पास जबरदस्त किले बन्दी की। इन नये जबरदस्त आक्रमणों के कारण हजारों लोगों का कत्लेआम किया गया और फसल एवं गाँवों को नष्ट कर दिया गया। मुक्त क्षेत्रों मे जनसंख्या में तेजी से कमी हुई और स्थायी सेना की संख्या 1942 में 300,000 मात्र रह गई।

इस प्रबल धारा के प्रवाह को 1944 में ही बदला जा सका। किसानों के लड़ाकू दस्तों का विस्तार किया गया। अब संघर्ष एक निर्णायक मोड़ की ओर बढ़ रहा था। 1944-45 में संघर्ष का विस्तार किया गया। साम्यवादी क्षेत्रों का विस्तार शांटूंग, शैंसी, जियांगूस, हुनान की सीमाओं, हुबई एवं हेनान क्षेत्रों में किया गया। शत्रु द्वारा अधिकृत नगरों एवं गाँव में जापान विरोधी आंदोलन और अधिक व्यापक एवं गहरा हो गया। उत्तर, केन्द्रीय तथा दक्षिण चीन के शत्रु क्षेत्रों में स्थापित की गई सरकारों को उखाड़ फेंका गया परन्तु इन क्षेत्रों मे शत्रु द्वारा जबरदस्त लूटपाट भी की गई थी। अप्रैल 1945 तक पीपुल्स आर्मी की संख्या 910,000 तक, छापामारों की संख्या 2,00,000 तक तथा आत्म-सुरक्षा दस्तों की संख्या 10,000,000 सदस्यों तक हो गयी। 19 मुक्त क्षेत्रों की स्थापना की गई जिनका क्षेत्रफल 950,000 वर्ग किलो मीटर था तथा जनसंख्या 95,500,000 तक थी। मुक्त क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण सामरिक स्थिति वाले क्षेत्र थे। जापानियों द्वारा अधिकृत किये गये अधिकतर क्षेत्रों, सम्पर्क लाइनों को जनवादी सेनाओं के द्वारा घेर लिया गया।

इसी बीच 7 मई, 1945 को जर्मनी के आत्मसमर्पण की संधि पर हस्ताक्षर हो गये। जर्मनी के द्वारा बिना किसी शर्त के पूर्ण आत्मसमर्पण कर देने से जापान बड़ी ही अजीब स्थिति में आ गया और उसका सैनिक तौर पर पूर्णतः अलगाव भी हो गया। फिर भी जापान ने चीन में अपने अभियान को जारी रखा। 14 अप्रैल, 1945 को चीन एवं सोवियत संघ के बीच मित्रता एवं गठबंधन की संधि पर हस्ताक्षर हुए। इस संधि का तात्पर्य यह था कि दोनों देश उस समय तक मित्र राष्ट्रों का समर्थन करते रहेंगे जब तक कि जापान की अन्तिम पराजय नहीं हो पाती। 8 अगस्त, 1945 को सोवियत संघ ने जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

इसका अनुसरण करते हुए लाल सेना ने भी जापान के विरूद्ध नये आक्रमणों को शुरू किया। दो माह के अन्दर ही पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने जापानियों से 315,000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र, जिसकी जनसंख्या 18,712,000 थी और 190 शहरों को मुक्त करा लिया। मुक्त क्षेत्रों का पुनः विस्तार होनें लगा।

2 सितम्बर, 1945 को अमेरीका द्वारा हिरोशिमा पर परमाणु बम गिरा दिये जाने से जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इस प्रकार चीनी जनता के द्वारा जापान के विरूद्ध लड़े गये लम्बे एवं वीरता पूर्ण संघर्ष का अन्त हुआ। हजारों लोगों ने नये सिद्धान्त पर आधारित अपनी देश की मुक्ति के लिये अपने जीवन, अपने रोजगारों तथा जीवन के अपने परम्परागत मार्ग को बलिदान कर दिया। बाह्य शत्रु को पराजित कर स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली गई। मुक्त किये गये क्षेत्रों में नये जीवन को रचा गया और इन नये क्षेत्रों ने उनको युद्ध में विजय प्राप्त करने में मदद की यद्यपि इनकी क्योमिंनटांग एवं उसके सहयोगियों से अभी रक्षा भी की जानी थी। इसका विवरण अर्थात चीनी क्रान्ति की सफलता का विवरण आगामी इकाई में किया जायेगा।

बोध प्रश्न 2

1) साम्यवादियों ने महिलाओं को लामबन्द करने के लिये जो प्रयास किये उनका 5 पंक्तियों मे विवरण दें।

....

....

....

....

....

2) युद्ध में अमेरिका के शामिल होने पर चीन पर जो प्रभाव हुआ उसकी विवेचना लगभग 5 पंक्तियों में कीजिये।

....

....

....

....

....

3) लाल क्षेत्रों की कार्य शैली की लगभग 15 पंक्तियों में विवेचना कीजिये।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

34.8 सारांश

साम्यवादियों के लिये महान अभियान (लौंग मार्च) एक महान अनुभव था। लगातार पराजयों के बावजूद अन्ततः उन्होंने अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया और जनता में उनका समर्थन बढ़ा। जैसे ही चीन में जापान

का आक्रमण शुरू हुआ वैसे ही तत्काल साम्यवादियों ने विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि क्योमिंनटांग के साथ संयुक्त मोर्चे का गठन किया गया था लेकिन इस समय में भी साम्यवादियों ने अपने प्रभाव क्षेत्रों में अपनी क्रान्तिकारी नीतियों एवं सुधारों को जारी रखा। लाल क्षेत्रों में ऐसे नये समाज की रचना की गई जिसने जीवन के सम्पूर्ण क्षेत्र को रूपातंरित कर दिया। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी एवं अन्य साम्यवादी संगठनों ने जापानियों का विरोध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

34.9 शब्दावली

राष्ट्रीय पूंजीपतिः ऐसे पूंजीपति जिन्होने जापान के विरूद्ध युद्ध का समर्थन किया।

लौंग मार्च (महान अभियान): लौंग मार्च अग्रेंज़ी भाषा का शब्द है और इसका प्रयोग क्यांगसी सोवियत को 1934 में लाल सेनाओं ने खाली करने के बाद जो प्रस्थान किया उसके लिये किया जाता है।

34.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपने उत्तर का आधार भाग 34.2 को बनायें।
2) i) × ii) ✓ iii) × iv) ×
3) अपने उत्तर का आधार उपभाग 34.3.4 को बनायें।

बोध प्रश्न 2

1) अपने उत्तर के लिये भाग 34.6 को देखें और उसके अन्दर सामाजिक सुधार उपायों, राजनीतिक शिक्षा तथा भागेदारी को शामिल करें।
2) संयुक्त राज्य अमेरिका ने साम्यवादियों का विरोध किया और क्योमिंनटांग का समर्थन उसके युद्ध में शामिल होने पर चीन के द्वारा जापान का विरोध करने की शक्ति बढ़ी, लेकिन इसने साम्यवादियों के विरूद्ध क्योमिंनटांग को भी ताकत प्रदान की। देखें भाग 34.7
3) अपने उत्तर का आधार भाग 34.6 को बनायें।